CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शिक्षक-प्रशिक्षण में आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका: एक अध्ययन

सुरभि साहू
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
Email-**surabhisahu752@gmail.com**

First draft received: 05.08.2023, Reviewed: 09.08.2023, Accepted: 28.08.2023, Final proof received: 25.09.2023

Abstract

शिक्षा में सूचना व प्रौद्योगिकी के अंतरण से शिक्षा प्रणाली में महती परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस किया गया है। आवश्यक परिवर्तन के उपरांत ही शैक्षिक लक्ष्यों को सुगम बनाया जा सकता है। इसी क्रम में कक्षागत शिक्षण प्रक्रिया को भी उत्तम बनाने की आवश्यकता को महसूस किया गया। क्योंकि कक्षागत शिक्षण कार्य में 'शिक्षक' एकमात्र प्राणवायु प्रदान करने वाले साधन के रूप में प्रतीत होता है। इसीलिए अन्य परिवर्तनों के साथ आवश्यक है कि शिक्षक-प्रशिक्षण प्रक्रिया को भी संवर्धित किया जाए।

वर्तमान समय में निरन्तर हो रहे मनोवैज्ञानिक शोधों ने शिक्षा की दृष्टि से विविध तत्वों की पहचान की है, जिनके विशेष महत्व व आवश्यकता की भी जानकारी प्राप्त हुई। उन्ही कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक 'आत्म-प्रभावकारिता' भी प्रकाश में आया है। आत्म-प्रभावकारिता मुख्य रूप से लक्ष्य, कार्य, चुनौतियों व समस्याओं के लिए आवश्यक मार्गों का निर्देशन करता है। व्यावहारिक रूप से कहा जाए तो, व्यक्ति प्रदत्त कार्य को जितने बेहतर तरीके से संपादित करता है, यह उसकी आत्म-प्रभाकारिता पर ही निर्भर है।

एक शिक्षक जब कक्षागत शिक्षण कार्य करता है तो वह यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवहारों का प्रदर्शन इस प्रकार से हो कि वह अपने ज्ञान व क्षमताओं का अनुप्रयोग अपेक्षित लक्ष्य के अनुरूप (अर्थात् जो उपयोगी व प्रभावी हो) करे, अन्यथा शिक्षक अपने शैक्षिक कार्यों में सफल नहीं माना जाता है। इन क्षमताओं के लिए आत्म-प्रभावकारिता की विशेष भूमिका है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति में प्रभावी प्रदर्शन हेतु उपयुक्त रणनीतियों के चयन व उनके निष्पादन हेतु प्रोत्साहन मिलता है तथा उन्हें बाधाओं व चुनौतियों से सीखने की क्षमता भी प्राप्त होती है। अतः शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए आत्म-प्रभावकारिता का अपना एक विशिष्ट स्थान है।

Keywords: *शिक्षक-प्रशिक्षण, आत्म-प्रभावकारिता, शिक्षक, समायोजन* आदि.

परिचय

शिक्षा की प्रक्रिया को गत्यात्मक बनाए रखने के उद्देश्य से जीवंत केन्द्र बिंदु के रूप में शिक्षक को स्वीकार किया गया है। शैक्षिक पद्धति, विद्यालयी व्यवस्थाएं, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएं आदि सभी तब तक निर्जीव ही माने जाते हैं, जब तक उन्हें कौशल युक्त शिक्षक रूपी प्राण वायु की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है। व्यवहारिक रूप में भी देखा जाए तो सूचना व प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप तथ्यों व सूचनाओं का भण्डार होते हुए भी विद्यार्थी को विशिष्ट मार्गदर्शन व निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है, जो उन्हें उपलब्ध ज्ञान के अनुप्रयोग से परिचित कराए तथा आवश्यकताओं को पहचानने में मदद करे। शिक्षक ही वह एकमात्र साधन है जो ज्ञान के सही अनुप्रयोग से परिचित कराता है तथा संज्ञानात्मकता

को बढ़ाता है। कहा भी गया है कि शिक्षक व छात्र का भावनात्मक आदान प्रदान ही शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है। शिक्षक को उनके विशिष्ट स्थान का एहसास कराते हुए बाल कृष्ण जोशी जी ने शिक्षकों को परामर्श दिया है कि शिक्षक स्वयं को केवल वह श्रमजीवी ना समझें, जिसका कार्य सुबह दस बजे आरम्भ होकर चार बजे समाप्त हो जाता है। एड्म्स द्वारा भी प्रदत्त शिक्षा की द्विमुखी प्रक्रिया में 'विद्यार्थी' व 'शिक्षक' को ही दो विशिष्ट धुरी के रूप में स्वीकार किया गया है। सामाजिक दृष्टिकोंण को ध्यान में रखते हुए ड्यूवी द्वारा शिक्षा को त्रिधुवीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया, जिसमें पाठ्यक्रम को तृतीय धुरी के रूप में सम्मिलित किया गया। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा विद्यार्थी, शिक्षक व पाठ्यक्रम के स्वरूप का अंतर्संबंधित परिणाम है। अतः शिक्षा प्रणाली को उपयुक्त बनाए रखने के लिए इन तीनों ही तत्वों का अपना विशिष्ट स्थान है। जहाँ शिक्षक को एक साध्य के रूप में तथा पाठ्यक्रम को एक साधन के रूप में आकलित किया जा सकता है, जिसमें विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को साधित किया जाता है। विविध मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के फलस्वरूप निरंतर आवश्यकता अनुरूप पाठ्यक्रम को संशोधित किया जाता है। इसी पाठ्यक्रम के अनुरूप ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी संशोधन को स्थान दिया जाता है, जो शिक्षा प्रक्रिया के लिए अति महत्वपूर्ण है। डेल एस. बीच द्वारा प्रशिक्षण को परिभाषित करते हुए लिखा गया है कि ''प्रशिक्षण एक संगठित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा लोग किसी निश्चित उद्देश्य के लिए ज्ञान तथा/अथवा निपुणताओं को सीखते है।'' अर्थात् प्रशिक्षण का सम्बंध उस व्यवहारिक ज्ञान से है जो व्यक्ति में तुलनात्मक रूप से ऐसे विचारों, अभिरूचियों एवं व्यवहारों में ऐसे स्थायी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है जो उन्हें कार्य के निष्पादन हेतु पूर्ण सक्षम बनाती है। इसी क्रम में प्रशिक्षण शब्द को शिक्षक शब्द के साथ अंतरित करके प्रकाश में लाया गया, जिसका तात्पर्य उन नीतियों, प्रक्रियाओं और साधनों से है जो शिक्षकों को ज्ञान, दृष्टिकोंण, व्यवहार और कौशलों से लैस करने के लिए डिजाइन की जाती है। अर्थात् साधारण मनुष्य को ऐसे व्यक्तित्व के रूप में पोषित किया जाता है जिसमें समाज को सकारात्मक रूप से परिवर्तित करने की क्षमता व योग्यता उत्पन्न हो। इसके लिए व्यक्ति को विभिन्न शिक्षण कौशलों का परिचय, शिक्षण विधियों के तरीके व अन्य शैक्षिक कलाओं से पोषित किया जाता है। यह कभी ना खत्म होने वाली अर्थात् सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है, जो व्यक्ति में स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है। साथ ही बेहद कौशलात्मक ढंग से कक्षागत समस्याओं के समाधान की क्षमता के साथ शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशिष्ट भूमिका के निर्वहन हेतु तैयार किया जाता है। प्रशिक्षण देने के लिए कुछ विशेष योग्यता वाले पात्र को ही सुनिश्चित किया जाता है। जैसे- विशिष्ट शैक्षिक योग्यता, व्यवसायिक गुण (व्यवसाय के प्रति निष्ठा, विषय का पूर्ण ज्ञान, इत्यादि), व्यक्तित्व सम्बंधी गुण, मनोवैज्ञानिक क्षमताएं आदि। इन मानकों को पूर्ण करने पर ही एक व्यक्ति को शिक्षक पद के लिए प्रशिक्षित होने का सुअवसर प्राप्त करता है। लम्बे समय से शिक्षक प्रशिक्षुओं को विभिन्न शिक्षण कौशलों, शिक्षण विधियों इत्यादि से सुसज्जित किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप ही शिक्षक की एक ऐसी छवि निखरकर आती है जो सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। परंतु लगातार हो रहे मनोवैज्ञानिक शोधों के परिणामस्वरूप कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिक कारकों को प्रकाश में लाया गया जिनके अध्ययन से उनके महत्व व आवश्यकता सम्बंधी जानकारी प्राप्त हुयी, इसी क्रम में यह भी महसूस किया गया कि इन कारकों को यदि शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए अनिवार्य किया जाए तो इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।

इसी क्रम में मनोवैज्ञानिक कारक 'आत्म-प्रभावकारिता ' प्रकाश में आया। 'आत्म-प्रभावकारिता' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अल्बर्ट बण्डूरा द्वारा किया गया। अल्बर्ट बण्डूरा द्वारा प्रदत्त सम्प्रत्यय 'आत्म-प्रभावकारिता' से आशय उस क्षमता से है, जिसमें व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति हेतु उस उत्तम मार्ग के चयन का प्रयास करता है, जिसमें वह अपना शत प्रतिशत योगदान देकर अच्छा से अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास करता है। अतः आत्म-प्रभावकारिता के अंतर्गत प्रेरणा का स्व-नियमन करके लक्ष्य प्राप्ति हेतु स्व-निर्देशन की क्षमता को इंगित किया जाता है।

वर्तमान समय में जब हमारे समक्ष तथ्यों व सूचनाओं की सूचना व प्रौद्योगिकी के कारण पूर्ण सुलभता है, तो आवश्यकता है कि कक्षागत उन तत्वों की पहचान की जाए जो शिक्षक को भावनात्मक व संवेगात्मक रूप से स्थिर बनाए और शत-प्रतिशत शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित करे। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों में ऐसी सकारात्मक मनोवृत्ति को विकसित किया जाए जिसमें शिक्षक स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति में प्रेरित रखे फिर चाहे कक्षागत परिस्थितियां कितनी भी जटिल क्यों ना हों, क्योंकि वर्तमान युग परिवर्तन का युग है। इस समय में सूचना व प्रौद्यौगिकी के साथ चीजें इस प्रकार से परिवर्तित हो रही हैं जिसमें शिक्षक को स्वयं को कक्षागत परिस्थितियों में प्रेरित रखना पड़ता है फिर चाहे कक्षागत परिस्थितियां कितनी भी जटिल क्यों ना हों। परिवर्तन के इस युग में समय के साथ चीजें सतत् रूप से परिवर्तित हो रही हैं, जिससे शिक्षा जगत भी अछूता नहीं है। परिणामस्वरूप शिक्षकों को अनेकों चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है जो इस परिवर्तन की सकारात्मकता के साथ यह भी सुनिश्चित करता है कि परिवर्तन केवल वहाँ हो जहाँ इसकी आवश्यकता है और इस परिवर्तन का कोई पार्श्व-दुष्परिणाम भी ना हो। इस सम्पूर्ण परिवर्तित होते परिदृश्य में शिक्षक का स्थान अतुलनीय है, क्योंकि शिक्षक ही वह एकमात्र प्राणी होता है जो समाज के निर्माताओं का पथ प्रदर्शन करता है तथा अपने व्यक्तित्व से सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करता है। शिक्षक हमारे कल के भविष्य को समाजोपयोगी बनाने के उद्देश्य से उन्हें कच्ची मिट्टी से एक विशिष्ट स्वरूप को प्रदान करने की क्षमता रखता है। अतः निश्चित है कि यदि हमें इस परिवर्तित होते युग को स्वर्णिम स्वरूप प्रदान करना है तो शिक्षक को इसके लिए विशिष्ट रूप से तैयार करना होगा। शिक्षक तभी सहयोगी हो सकेगें जब वह स्वयं को इस कार्य के योग्य समझें व स्वयं को इसके लिए प्रेरित व तत्पर रखें, तभी वे कार्य को पूर्णतः सम्पादित करके अपेक्षित परिणाम दे सकते हैं। आत्मप्रभावकारिता वह महत्वपूर्ण कारक है जो शिक्षक को वह क्षमता प्रदान करेगी जिसमें वह स्वयं की क्षमताओं व योग्यताओं को आकलित करके अपना शत-प्रतिशत योगदान दे सके।

सम्बंधित शोध साहित्य

हयाती, एट. अल.(2021) ने बोरोबुदुर विश्वविद्यालय, जकार्ता में 2016/2017 की कक्षा में छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता और सीखने की उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया, इससे पता चलता है कि निम्न श्रेणी में आत्म-प्रभावकारिता और सीखने की उपलब्धि के बीच एक पारस्परिक संबंध है। विज्ञान और मानविकी संकाय के छात्रों में निर्धारण का गुणांक (आर स्क्वायर) 0.074 और 0.086 है। इसका मतलब है कि सीखने की उपलब्धि में केवल 7.4% और 8.6% भिन्नता को आत्म-प्रभावकारिता चर द्वारा समझाया जा सकता है, और बाकी अन्य कारकों से प्रभावित होता है।

महमूद, ए.(2019) ने सीखने के उच्च स्तर पर शैक्षणिक प्रदर्शन पर आत्म-प्रभावकारिता के प्रभाव का अध्ययन कर यह शोध परिणाम के रूप में यह बताया कि स्पीयरमैन के सहसंबंध के परिणामों ने संकेत दिया कि उच्च स्तर पर अध्ययन करते समय छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच महत्वपूर्ण संबंध होता है। इसके अलावा, स्वतंत्र चर यानी आत्म-प्रभावकारिता का आश्रित चर यानी शैक्षणिक प्रदर्शन पर निश्चित प्रभाव पड़ता है।

अरविन्द,एच., एट. अल.(2017) ने ओमान में चुनिंदा निजी प्रबंधन कॉलेजों में आत्म-प्रभावकारिता, नियंत्रण का स्थान और प्रतिबद्धता पर एक अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया कि आत्म-प्रभावकारिता स्कोर 4 रेटिंग बिंदुओं में से 2.68 था, जो आत्म-प्रभावकारिता पर औसत स्कोर से ऊपर दर्शाता है। आत्म-प्रभावकारिता पर परिणाम ने संकेत दिया कि संकाय सदस्यों को अपने भविष्य के प्रयासों में सफल होने का दृढ़ विश्वास था।

शहजाद, के., एट. अल.(2017) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शिक्षक की आत्म-प्रभावकारिता के प्रभाव का पता लगाने के उद्देश्य से यह अध्ययन आयोजित किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट पता चला कि शिक्षक की आत्म-प्रभावकारिता का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

टेलर ई.(2014) ने आत्म-प्रभावकारिता और छात्रों की शैक्षणिक सफलता के बीच संबंध का अध्ययन किया और बताया कि छात्रों के ग्रेड और आत्म-प्रभावकारिता आपस में जुड़े हुए हैं। शिक्षकों को यह बताया जा सकता है कि कक्षा में प्रभावी शिक्षण का अभ्यास करने के लिए ये कारक एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

अहमद, ए. व सफ़ारिया, टी.(2013) ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर आत्म-प्रभावकारिता के प्रभाव का अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया कि उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र कम आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्रों की तुलना में उच्च लक्ष्य में योगदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र अधिक संख्या में गणितीय समस्याओं को हल करने में विश्वास करते हैं तथा जटिल पाठ्यक्रमों को प्राथमिकता देते हैं।

अध्ययन की सार्थकता

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षक की आत्म-प्रभावकारिता विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि इत्यादि चरों को प्रभावित करती है। अतः यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक की आत्म-प्रभावकारिता का स्तर उच्च हो तभी विद्यार्थियों की आत्म-प्रभावकारिता का स्तर भी उच्च हो सकेगा जो उनके विभिन्न शैक्षिक चरों में वृद्धि करेगा। सम्बंधित तथ्य के निर्धारण हेतु ही शोधार्थी ने शिक्षक-प्रशिक्षण में आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका विषय का चयन किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऐसे शिक्षक की अपेक्षा रखी जाती है जो किसी विशिष्ट ही नहीं अपितु विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं व कलाओं से परिपूर्ण हो। जिसमें विषयगत ज्ञान के साथ-साथ तकनीकीगत जैसी अन्य क्षमताओं से भी परिपूर्ण हो, तभी शिक्षकों को पूर्णतः योग्य व कुशल माना जाता है। माँग के अनुरूप शिक्षकों की पूर्ति हेतु ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो इस बदलती हुई शैक्षिक परिस्थितियों में स्वयं को कुशलतापूर्वक समायोजित कर सके तथा स्व क्षमताओं व योग्यताओं का पूर्णतः आत्मविश्वास के साथ प्रयोग कर सके।

एक शिक्षक को कक्षागत शिक्षण में जिस मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है वह है- कक्षागत परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करना। क्योंकि कक्षा विभिन्न परिवेश, संस्कृति व शीलगुण वाले विद्यार्थियों का ऐसा समूह होता है, जहाँ शिक्षक का यह कर्तव्य होता है कि वह सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्रदान करते हुए उन्हें उनकी प्रतिभाओं व कुशलताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करे जिससे विद्यार्थी को उसकी व समाज की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा का प्रदान की जा सके।

उपरोक्त शिक्षागत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए यह सर्वाधिक आवश्यक है कि शिक्षक सर्वप्रथम स्वयं को शैक्षिक व कक्षागत परिस्थितियों में समायोजित करे तभी वह शिक्षण कार्य को प्रभावी ढ़ंग से पूर्ण कर पाएगा और शैक्षिक उद्देश्यों को पूर्ण कर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए स्वयं को तैयार कर सकेगा। क्योंकि यह तो सुविदित है कि पूर्ण रूप से समायोजित शिक्षक ही प्रभावी शिक्षण के लिए कार्य कर सकता है, अन्यथा शिक्षक पूर्णरूप से प्रशिक्षित व विषयवार जानकारी होने के बावजूद वह स्वयं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने में अर्थात् योग्यता व क्षमता के अनुकूल प्रदर्शन करने में असमर्थ ही होगा, जो शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करेगा।

बण्डूरा के अनुसार आत्म-प्रभावकारिता जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है। क्योंकि आत्म-प्रभावकारिता व्यक्ति को लक्ष्य उन्मुख दृष्टिकोण हेतु प्रेरित करती है अर्थात् प्रेरणा के स्व-नियमन में यह महती भूमिका का निर्वहन करती है। बोरिंग लैंगफील्ड एवं बैल्ड द्वारा प्रदत्त समायोजन की परिभाषा से स्पष्ट है कि व्यक्ति प्रेरकों की

सहायता से ही परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर समायोजन करता है। अतः स्पष्ट है कि समायोजन के लिए आत्म-प्रभावकारिता की महती भूमिका है क्योंकि यह प्रेरणा का स्व-नियमन करके शिक्षक को समायोजित करने में सहायक होता है। अतः शिक्षक प्रशिक्षुओं में आत्म-प्रभावकारिता का निरूपण विशेष महत्व रखता है। क्योंकि आत्म-प्रभावकारिता विशिष्ट व्यवहार और प्रेरणा की ओर ले जाती है, जो प्रभावी प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करती है। आत्म-प्रभावकारिता का प्रशिक्षण में समावेशन शिक्षक को इस बात के लिए पहले से तैयार करेगा कि वह प्रत्येक उपस्थित परिस्थितियों में स्वयं को सरलता से समायोजित करके कक्षागत शिक्षण कार्य को प्रभावी ढंग से कर सके एवं आवश्यकता होने पर उन शैक्षिक परिस्थितियों में शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के अनुरूप बदलाव व सुधार हेतु भी स्वयं को तत्पर रखे।

बण्डूरा(1993) द्वारा आत्म-प्रभावकारिता युक्त व्यक्ति में निम्नलिखित गुणों की पुष्टि की गयी है जैसे-

1. समस्याओं व बाधाओं को खतरों के रूप में न देखकर चुनौतियों के रूप में देखना।

2. निर्धारित लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता।

3. नैदानिक अभिविन्यास की क्षमता जिसके अंतर्गत प्रदर्शन को उत्तम बनाने के उद्देश्य से उपयोगी प्रतिक्रिया को व्यक्त किया जाता है।

4. असफलता को सीखने के अवसर के रूप में प्रतिबिंबित करना।

उपरोक्त बिंदुओं पर विचार से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के साथ-साथ इस प्रकार की क्षमता व गुणवत्ता शिक्षकों के लिए भी आवश्यक है। तभी शिक्षक-प्रशिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है। जैसे- शिक्षक यदि परिस्थितियों के लिए स्वयं को योग्य समझेगा तभी वह अपनी योग्यताओं व क्षमताओं का शत-प्रतिशत प्रदर्शन करेगा, जिससे ना केवल शैक्षिक कार्य प्रभावी होगें साथ ही साथ शिक्षक की लक्ष्यों के प्रति आबद्धता का व्यक्तित्व विद्यार्थी को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा।

निष्कर्ष

व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो शैक्षिक कार्यों में तकनीकी व सहगामी क्रियाओं की अधिकता व अन्य विद्यालयी प्रतिबद्धताएं अक्सर ही शिक्षक को शैक्षिक उद्देश्यों की प्रतिबद्धता से विरक्त कर देती है। अतः ऐसे परिदृश्य में उन गुणों की महती आवश्यकता है जो शिक्षक को निर्धारित लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रखें तथा शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सफल शिक्षक के लिए आत्म-प्रभावकारिता किस प्रकार से उपयोगी है क्योंकि आत्म-प्रभावकारिता एक शिक्षक को नैदानिक अभिविन्यास की क्षमता प्रदान करेगा जिसमें वह कक्षागत शिक्षण कार्य का प्रदर्शन उद्देश्य प्राप्ति के अनुकूल करके, लक्ष्य को केंद्र मे रखकर सतत् रूप से आबद्ध रहता है। शिक्षक कक्षागत अनुशासन व अन्य विद्यालयी अपेक्षाओं की पूर्ति के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी का विकास उसी अनुरूप हो जैसा लक्ष्यों में इंगित किया गया है।

अतः आवश्यकता है कि आत्म-प्रभावकारिता को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विशेष स्थान प्रदान किया जाए, जिससे सभी शैक्षिक विशेषकर व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावशाली ढंग से सफलतापूर्वक की जा सके और शैक्षिक कार्यों की उपयोगिता को बढ़ाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

Zimmerman B. J. (2000). Self-Efficacy: An Essential Motive to Learn. *Contemporary Educational Psychology*. 25(1), 82-91. Retrived from

https://doi.org/10.1006/ceps.1999.1016

Linnenbrink, E. A.&. Pintrich, P. R. (2003). The Role of Self-Efficacy Beliefs InStudent Engagement and Learning in theClassroom. *Reading and Writing Quarterly*.19(2), 119-137. Retrived from

https://doi.org/10.1080/10573560308223

Bandura, A., Adams, N.E.(1977). Analysis of self-efficacy theory of behavioral change. Cognitive Therapy Research(SpringerLink)1, 287–310. Retrived from

https://doi.org/10.1007/BF01663995

Bandura, A. (1978). Reflection on self-efficacy. *Advances in behaviour research and therapy*. 1(4), 237-269. Retrived from

https://doi.org/10.1016/0146-6402(78)90012-7

Bandura, A. (1993). Perceived Self-Efficacy in Cognitive Development and Functioning. *Educational psychologist* 28(2), 117-148. Retrived from

https://doi.org/10.1207/s15326985ep2802_3

Pratiwi, I. W. (2020). The Effect of Self-Efficacy and Learning Achievement of Students in the Class of 2016/2017 at Borobudur University, Jakarta. *KnE Social Sciences*, 352-364. Retrived from DOI: 10.18502/kss.v4i15.8223

Mehmood, A., Adnan, M., Shahzad, A., & Shabbir, F. (2019). The Effect of Self-Efficacy on Academic Performance at Higher Level of Learning: A Case Study of Punjab University Lahore. *Journal of Educational Sciences*, *6*(1), 33-47. Retrived from https://jesar.su.edu.pk/uploads/journals/3_Effect_of_Self_Efficacy.pdf

Hans, A., Deshpande, A., Pillai, A. E., Fernandes, C. J., Arora, S., Kariya, P., & Uppoor, A. (2017). A Study on Self-Efficacy, Locus of Control and Commitment in Select Private Management Colleges in Oman. *Amity Journal of Management Research*, *2*(1), 1-9. Retrived from https://amity.edu/UserFiles/admaa/f8098Paper%201.pdf

Shahzad, K., & Naureen, S. (2017). Impact of Teacher Self-Efficacy on Secondary School Students' Academic Achievement. *Journal of Education and Educational*

Development, *4*(1), 48-72. Retrived from https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1161518.pdf

Taylor, E. E. (2014). The correlation between self-efficacy and the academic success of students. Retrived from

https://core.ac.uk/download/pdf/58825904.pdf

Ahmad, A., & Safaria, T. (2013). Effects of self-efficacy on students' academic performance. *Journal of Educational, Health and Community Psychology*, *2*(1), 22-29. Retrived from

https://www.researchgate.net/publication/263162945_Effects_of_SelfEfficacy_on_Students'_Academic_Performance